'रेडियो' में बदले-बदले से हैं हिमेश रेशमिया

प्रीटी इस सप्ताह प्रदर्शित 'रेडियो' फिल्म दो मायनों में नोटिस की जाएगी पहली तो यह कि इसमें हिमेश रेशमिया ने पहली बार गले से गाया है और अपने अभिनय में सुधार किया है। दूसरी बात यह कि आजकल जहां पचास-सौ करोड़ रुपयों के बजट वाली फिल्में बन रही हैं वहीं यह फिल्म मात्र छह करोड़ रुपये में बनी है और यह लागत तो वह आसानी से वसूल कर ही लेगी। फिल्म आजकल के रेडियो जाकी यानि आरजे की जिंदगी पर आधारित है जोकि फोन कॉल्स के जरिए दूसरों की समस्याओं का हल करते-करते लोकप्रिय हो जाते हैं।

विवान शाह (हिमेश रेशमिया) मिर्ची रेडियो पर आरजे है। वह अपने सुनने वालों की समस्याओं का हल चुटकी बजाते कर देता है जिससे उसके पास फोन कॉल्स की भरमार रहती है और लोग उसको सुनने को आतुर रहते हैं। वह अपनी जिंदगी में सफल तो है लेकिन खुशहाल नहीं। दूसरों की जिंदगी की समस्याएं पल भर में दूर कर देने वाले विवान की खुद की जिंदगी में सब कुछ सही नहीं चल रहा और उसका अपनी पत्नी पूजा तलवार (सोनल सहगल) से लगातार तनाव बना रहता है। पूजा को उसकी भागदौड़ भरी जिंदगी पसंद नहीं है। रिश्ते इस कदर खराब होते हैं कि दोनों में तलाक हो जाता है लेकिन दोनों की दोस्ती बरकरार रहती है। इसी बीच विवान की जिंदगी में एक और लड़की शनाया (शहनाज ट्रेजरीवाला) आती है। विवान को लगता है कि यही उसका सच्चा प्यार है और वह पूजा के साथ यह बात शेयर करता है। यह जानने के बाद पूजा फिर उसकी ओर आकर्षित होती है। अब विवान पूजा या फिर शनाया का साथ पाता है यह जानने के लिए फिल्म देखना सही रहेगा क्योंकि क्लाइमेक्स काफी रूचिकर है। फिल्म का सबसे सशक्त पक्ष परेश रावल हैं जो जब भी पर्दे पर आए दर्शकों को हंसा हंसा कर लोटपोट कर गए।

अभिनय के मामले में यदि हिमेश की पिछली फिल्में आप का सुरूर और कर्ज से इस फिल्म की तुलना करें तो निश्चित रूप से हिमेश ने अपने आप में सुधार किया है। यही नहीं उन्होंने जिस आरजे की भूमिका निभाई है उसके लिए भी उन्होंने गहन शोध किया। परेश रावल तो खैर बेहतरीन अभिनेता हैं ही। सोनल और शहनाज का काम भी अच्छा रहा। फिल्म का संगीत काफी अच्छा है और फिल्म के प्रदर्शन के पूर्व ही यह हिट हो चुका है।

कलाकार– हिमेश रेशमिया, सोनल सहगल, शहनाज ट्रेजरीवाला और परेश रावल, संगीत– हिमेश रेशमिया, निर्माता– रवि अग्रवाल, निर्देशक– ईशान त्रिवेदी।

महिंद्रा अमेरिका में खोलेगी नया असेंबली संयंत्र

मुंबई 9 दिसंबर(पीवीआई)। वाहन एवं कृषि उपकरण बनाने वाली प्रमुख कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा (एमएंडएम) ने आज कहा कि उसकी अमेरिकी सहयोगी कंपनी इस महीने के अंत में नया असेंबली और वितरण केंद्र खोलेगी। एमएंडएम ने बंबई स्टाक एक्सचेंज को बताया '' दिसंबर 31 2009 को अमेरिका में नया असेंबली और वितरण केंद्र खोला जाएगा।''

कंपनी ने कहा है कि नया असेंबली और वितरण संयंत्र उसकी अमेरिकी इकाई कैल्हान जीए का स्थान लेगा। कंपनी ने यह भी बताया है कि महिंद्रा यूएसए ने उत्तरी अमेरिका का मुख्यालय टेक्सास में टामबाल से ह्यूस्टन में स्थांतरित किया गया है। महिंद्रा यूएस महिंद्रा एण्ड मंहिद्रा के पूर्ण स्वामित्व में है और उसके कृषि उपकरण कारोबार का अंग है। यह इकाई 1994 तमें शुरू की गयी थी।

विमानन क्षेत्र में 120 अरब डालर का निवेश संभव : नांबियार

वशिंगटन 9 दिसंबर(पीवीआई)। भारत के नागर विमानन सचिव ने कहा कि देश के तेजी से वृद्धि करते विमानन क्षेत्र में 2020 तक 120 अरब डालर का निवेश जज्ब कर सकता है। नांबियार ने अमेरिका.भारत विमानन भागीदारी सम्मेलन के मौके पर कल कहा, ''रपट के मुताबिक भारतीय विमानन क्षेत्र में 2020 तक 120 अरब डालर का निवेश जज्ब कर सकता है। विश्लेषकों ने अनुमान जताया कि घरेलू यातायात 2020 तक बढ़कर 16–18 करोड़ हो जाएगा जबकि अंतर राष्ट्रीय यातायात बढ़कर पांच करोड़ से अधिक हो जाएगा।''सम्मेलन में दोनों देशों के विमानन क्षेत्र के करीब 200 उद्योगपति भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा, ''हवाईअड्डे से जुड़ा बुनियादी ढांचा भारत का ऐसा क्षेत्र है जिसमें निवेशकों के लिए अपार संभावनाएं हैं। भारत सरकार ने हवाईअड्डों के उन्नयन और आधुनिकीकरण की योजना लांच की है जिसमें 2010 तक 10 अरब डालर का निवेश हो सकेगा।''नांबियार ने कहा कि भारतीय हवाई उद्योग विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते हवाई बाजारों में है जो आर्थिक वृद्धि से प्रेरित है। आर्थिक वृद्धि के कारण सवारियों की संख्या और घरेलू विमानों की मांग बढ़ रही है। उन्होंने कहा, ''अनुमानों के मुताबिक भारतीय नागर विमानन बाजार 2008–20 के दौरान 90 अरब डालर के असैनिक विमानों की बिक्री होगी। इस दौरान कुल 1000 विमानों की बिक्री होने का अनुमान है।

जापानी अर्थव्यवस्था ने 1.3 फीसदी वृद्धि दर दर्ज की

तोक्यो 9 दिसंबर (पीवीआई)।जापानी अर्थव्यवस्था ने जुलाई–सितंबर 09 की तिमाही के दौरान 1–3 फीसदी की वास्तविक सालाना वृद्धि दर दर्ज की जो पहले 4–8 फीसदी बताई गयी थी। 2002 की अप्रैल.जून तिमाही के बाद किसी प्रारंभिक आंकड़े की समीक्षा में इतनी बड़ी गिरावट नहीं हुई थी। सकल घरेलू उत्पाद के ताजा आंकड़ों से स्पष्ट है कि विश्व की यह दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था ने मंदी से उबर कर लगातार लगातार दूसरी तिमाही में वृद्धि की राह पर बनी हुई है। पर अप्रैल–जून की तिमाही की तुलना में इसकी रफ्तार कमजोर पड़ गयी है। जापान के एक अधिकारी कीसुके त्सुमुरा ने कहा, ''ताजा आंकड़ों से स्पष्ट है कि कंपनियों की ताजा पूंजी निवेश में रुचि नहीं रही।'' उल्लेखनीय है कि जापान सरकार ने अभी कल 81 अरब डालर का ताजा पैकेज जारी किया।

व्यायाम जैसे ही लाभ हैं टहलने के

वर्षा शर्मा'चलो कुछ दूर टहल आएं' अपने किसी परिचित का ऐसा आग्रह हम अक्सर स्वीकार कर लेते हैं। टहलने से एक और जहां हमारा समाजीकरण होता है तो दूसरी ओर स्वास्थ्य लाभ भी मिलता है। टहलना अत्यन्त सरल तथा लाभप्रद व्यायाम है। सहज रूप से टहलने से हमें वे सभी लाभ प्राप्त हो जाते हैं जो व्यायाम करने से मिलते हैं।टहलने का श्वास गति, हृदय गति तथा रक्त प्रवाह पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। टहलते समय श्वास–प्रश्वास की गति तेज होने से हानिकारक तत्व प्रश्वास के जरिए तेजी से बाहर निकलते हैं। टहलने से पाचन प्रणाली भी उत्तेजित होती है। कब्ज से परेशान लोगों को तो अवश्य ही टहलना चाहिए। टहलने से भूख भी बढ़ती है। टहलना शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जितना लाभदायक होता है उससे कहीं अधिक फायदा हमारे मानसिक स्वास्थ्य को पहुंचाता है।हलते समय शारीरिक मुद्रा का ध्यान रखना चाहिए अन्यथा अभीष्ट लाभ नहीं मिलता। टहलते समय शरीर सीधा तथा तना होना चाहिए। टहलते समय मुंह बिल्कुल बंद होना चाहिए तथा सांस पूरी तरह नाक से ही लेना चाहिए।टहलते से मन को शांति मिलती है तथा काम क्रोध और ईर्ष्या जैसे मनोदोषों का शमन करने में सहायता मिलती है। विद्यार्थियों के लिए सुबह टहलना बहुत ही लाभदायक होता है क्योंकि प्रातःकाल नियमित रूप से टहलने से एकाग्रता का सहज विकास होता है। टहलने से रात को गहरी तथा पूरी नींद आती है तथा शरीर को असीम शांति मिलती है।विभिन्न अनुसंधान बताते हैं कि प्रातःकाल टहलने से शरीर में स्रावित होने वाले विभिन्न हारमोन नियंत्रित तथा नियमित होते हैं। अंतस्रावी ग्रंथियों की कार्यप्रणाली नियमित होने से हारमोन असंतुलन से उठने वाली अनेक समस्याएं नियंत्रित होती हैं। मस्तिष्क में तनाव पैदा करने वाले रसायनों में भी परिवर्तन आता है जिससे हमारे मूड पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।टहलना एक प्राकृतिक प्रशांतक है। जिससे मस्तिष्क की विभिन्न संरचनाएं तनावरहित होकर शिथिल हो जाती हैं इससे मन तथा मस्तिष्क को सुकून मिलता है इससे हमारा मूड खुशनुमा बनता है। नियमित रूप से टहलने से आत्मविश्वास बढ़ता है तथा मन में शांति के स्थायी भाव पैदा होते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, टहलने से मस्तिष्क में एंडोर्फिन हारमोन स्रावित होता है जिससे हमारा मूड परिवर्तित होता है तथा सकारात्मक भावनाएं पैदा होती हैं।विशेषज्ञों के अनुसार, टहलने से हमारे आसपास के लोगों से हमारे संबंधों में भी सुधार आता है। उदाहरण के लिए यदि पति और पत्नी यदि साथ–साथ टहलते हैं तो उनमें अंतरंगता बढ़ती है तथा उनमें मैं के स्थान पर हम के भाव पैदा होते हैं। साथ ही उनमें परस्पर सहारा देने की भावना और परस्पर विश्वास के भाव भी गहरे होने लगते हैं।जब हम टहलने के लिए बाहर निकलते हैं तो घर के वातावरण, जिम्मेदारियों तथा तनाव पैदा करने वाले कारकों से चाहे अस्थायी रूप से ही सही परन्तु कुछ देर के लिए मुक्ति पा जाते हैं जिससे अवसाद हम पर हावी नहीं हो पाता। दूसरी ओर यदि हम समूह में टहलते हैं तो आपस में हंसी–मजाक होता है जिससे हमारा मनोदैहिक स्वास्थ्य सुधरता है। अनुसंधानों से सिद्ध होता है कि हंसने से रक्त संचार तेज होता है जिससे दिमागी समस्याओं से पीड़ित रोगियों को लाभ होता है क्योंकि रक्त संचार में वृद्धि होने से मस्तिष्क को अधिक आक्सीजन तथा ग्लूकोज पहुंचता है।टहलने से हमें मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। हममें सकारात्मक भावनाओं का संचार होता है। भावनाओं का हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता से गहरा संबंध होता है। का अनुभव कम करते हैं इससे रोग प्रतिरोधी क्षमता उत्तम बनी रहती है।हालांकि टहलने के लिए कोई भी समय चुना जा सकता है परन्तु फिर भी प्रातः चार से छह बजे तक का समय सबसे अच्छा माना जाता है।

सैन्य अभियंता सेवाएँ

भारत के राष्ट्रपति की ओर से , गेरिसन अभियंता (आई) आर एण्ड डी , चंद्रायणगुट्टा हैदराबाद -58 द्वारा एम.ई.एस.व अन्य सरकारी विभागों की सुचि में रहने वाले तथा नहीं रहनवाले सभी उपयुक्त ठेकेदारों की ओर से निम्न लिखित कार्यो हेतु निविदाएँ आमंत्रित है।

क्रम सं.	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत	समया वधि	एम.ई. एस.की सूचि में नहीं रहनेवाले ठेकेदारों के लिए धरोहर राशि	निविदा मुल्य	आवदेनपत्र स्वीकारने की अंतिम तिथि	योग्यता प्रमाण पत्र एम ई एस की सुचि में रहे ठेकेदारों	अन्य ठेकेदारों	निविदा जारी करने की तिथि	निविदा स्वीकारने की तिथि
1.	देवाटालागुट्टा डी.एम.आर. एल कंचनबाग हैदराबाद में कुछ छुट-मुट अनुमोदन कार्यो का प्रावधान तथा अन्य मरम्मत कार्य।	11.50 लाख रूपय	06 माह	23,000/- रूपये	500/- रूपये	29 दिसंबर 2009	'ई' वर्ग 'ए' कक्षा	(I) एम.ई.एस.की सूचि अनुसार समांतर कार्यो को समान मुल्यों ,ठोस संपत्तिवार्षिक कार्य संपन्नता आदि। (II) सरकारी विभागों में नो रिकवरी आउटस्टेंन्डींग	30 दिसंबर 2009 के पश्चात्	21 जनवरी 2010

सुचना :1) किसी भी राष्ट्रीय कृत बैंक के कॉल जमा रसीद के द्वारा धरोहर राशि स्वीकार्य है। बैंक गारंटी बोंड स्वीकार्य नहीं है।

2) निविदा मुल्य को किसी भी राष्ट्रीय कृत बैंक के डी.डी.बैंकर्स चैक द्वारा गेरिसन अभियंता (आई) आर.और डी चंद्राणगुट्टा हैदराबाद की ओर जारी करें।

3) बिना किसी पूर्व धरोहर राशि के डी.डी.बैंकर्स चैक निविदा मुल्य आदि के वगैर रहा आवेदन पत्र अस्वीकार्य रहेगा।

4) एम.ई.एस.की सुचि में रहे ठेकेदारों को आवश्यक दस्तावेजों के द्वारा योग्यता प्रमाण पत्र उक्त निर्देशानुसार भेजनी होगी तथा नो रिफपरी आउटस्टेंहीग के लिए एफीडेवीट भेजना जरूरी है।

5) निविदा जारी करने हेतु अस्वीकार्य हुए आवेदन पत्रों को के आवेदकों को निविदा मुल्य प्रत्यर्पण नहीं होगा। हालाँ कि ठेकेदार अन्य उच्च अभियंता अधिकारी अर्थातमुख्य अभियंता आर.और डी.पिकेट सिकंदराबाद -3 पर आवेदन पत्र अस्वीकार्य होने हेु जानकारी पा सकता है। उनका निर्णय अंतिम एवं मान्य रहेगा। निविदा जारी न होने वाले ठेकेदारों को किसी भी प्रकार का मुआवजा दिया नहीं जाएगा।

6) उक्त जानकारियों एम.ई.एस.वेबसाईट :www.mes.gOv. in पर उपलब्ध है ।

निविदा की संपूर्ण सुचना आइ ए एफ डब्ल्यू -2162 एवं सुचि विषयक जानकारी एम.ई.एस.वेब साईट पर उपलब्ध है।

हस्ताक्षर/-

के. वेंकटा अप्पा राव
एई (सिविल)
गेरिसन अभियंता

आर.ओ. क्रमांक : 8514/2/ई 8

पाकिस्तान से बातचीत में भारत का नुकसान नहीं

कुलदीप नायर

मुंबई में 26/11 के आतंकी हमले की वर्षगांठ पर भारत और पाकिस्तान के अवबोधन में मैंने विपुल अंतर पाया। भारत ने साठ घंटे की उस त्रासदी की अनुकृति की प्रस्तुति की और यह संकल्प ग्रहण किया कि भविष्य में ऐसे कृत्य को 'सहन' नहीं किया जाएगा। पाकिस्तान ने कहा है कि अतीत में उसने अपनी ओर से समुचित और विपुल क्षोभ व्यक्त किया है ओर उसी की रटन्त लगाकर भारत समग्र वार्ता को टाल रहा है। और अरोपों प्रत्यारोपों का जाना–पहचाना सिलसिला भी दोनों देशों के बीच चला है। कभी–कभी मुझे ऐसा भी लगता है कि कोई चमत्कार ही दोनों देशों को समीप ला सकता है।

ये प्रतिक्रियाएं एक दूसरे के प्रति अविश्वास को ही रेखांकित करती है। दोनों देश विभाजन को नहीं भुला पा रहे हैं। कमोबेश उनकी सोच वही है जो तब थी, जब पाकिस्तान और भारत की सीमाओं का अंकन अगस्त 1947 में ब्रिटिशों ने भारत छोड़ा था। सत्य है कि विभाजन के समय रक्तपात हुआ था किन्तु दोनों में से कोई भी महिमा मंडित नहीं हो सका। उन्होंने अपनी आत्मा पर तनिक सा भी बोझ अनुभव किए बिना अपने ही पड़ोसियों की हत्याएं की और धर्म की शिक्षाओं को नकारा। अतएव वर्तमान गतिरोध मात्र यही दर्शाता है कि कालखंड के व्यतीत हो जाने पर भी अलगाव का कठोर कवच पूर्ववत कायम है। पाकिस्तान आज भी भारत का शत्रु नंबर एक हैं और पाकिस्तान में भारत के प्रति यही भावना व्याप्त है। दोनों देशों की सरकारें अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर एक दूसरे को धकियाने में लगी हैं।

यदि हमने कम से कम यात्रा और व्यापार को ही अपने विवादों से परे रखा होता तो भी हम अब दोनों देशों के बीच संबंधों को सामान्य बनाने के आधार आसानी से तलाश कर लेते। यदि और कुछ नहीं हो पाता तो इतना जरूर हो जाता कि स्थिति आज जितनी अधिक विद्रूपित है उतनी तो नहीं ही हो पाती। दोनों देशों में मीडिया एक रचनात्मक भूमिका तो निभा ही सकता था। किन्तु यह भी उग्र राष्ट्रवाद और स्वयं को ही सही मानने की सोच से नहीं उभर सका।

जो भी हो, यद्यपि पाकिस्तान ने विलम्ब से ही सही वार्ता के लिए आधार बनाने की प्रक्रिया आरम्भ तो की है। भारत ने वार्ता के लिए दो शर्तें रखी हैं। एक यह कि मुंबई नरसंहार के अपराधियों को न्याय के कटघरे में खड़ा किया जाए और दूसरी यह कि पाकिस्तान में आतंकवादी ढांचे को ध्वस्त किया जाए। इस्लामाबाद ने जकीउर रहमान लखवी समेत जो सात संदिग्ध व्यक्ति हिरासत में है उनके विरुद्ध केस दायर किए है। ऐसा बताया जाता है कि लखवी ही मास्टर माइंड है। यह बेहतर होता यदि हाफिज सईद हिरासत में होता। वही लश्कर–ए–तैयबा और जमात–उद–दावा का चेहरा है। भारत की दृष्टि में पाकिस्तान उसके प्रसंग में क्या कुछ करता है, यह आतंकवाद से निपटने के लिए उसके प्रयासों की कसौटी होगी। राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने पत्र में पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ जरदारी से कहा है कि वे राज्य के नीतिगत लक्ष्यों की पूर्ति हेतु लश्कर का उपयोग नहीं करें। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने निश्चय ही उन स्थानों की सूची दी होगी जिन पर लश्कर ने हमले किए थे। इनमें संसद भवन और अक्षरधाम मंदिर (गुजरात) शामिल है। डेविड हैडली और तहव्वुर राणा की अमेरिका में गिरफ्तारी यह दर्शाती है कि इन सभी हमलों के पीछे लश्कर का हाथ था, क्योंकि ऐसा बताया जाता है कि दोनों ही उससे संबद्ध हैं। सईद अभी उस दिन तक घर में नजरबंद था। किन्तु संदेह की सुई उसकी ओर निर्देशित होने के बावजूद पाकिस्तान सरकार ने उसे मुक्त कर दिया।

दुर्भाग्य से मुंबई हमले के दुष्कर्मियों के विरुद्ध केस दर्ज करने में पाकिस्तान ने एक वर्ष लगा दिया। इससे भारत में यह धारण बनी कि इस्लामाबाद अपने पांव खींच रहा है। किन्तु पाकिस्तान भी भारत पर यह दोष मढ़ सकता है कि कसाब के विरुद्ध अदालती कार्रवाई बहुत धीमी है। कसाब ही मुंबई कांड में शामिल रहे अपराधियों में अकेला जीवित आतंकवादी है। गृहमंत्री पी चिदम्बरम के इस बयान में कुछ वजन है कि ऐसा नहीं लगाना चाहिए कि भारत न्याय टाल रहा है।

यह तथ्य भी भुलाया नहीं जा सकता कि कसाब की गिरफ्तारी हुए एक वर्ष बीत गया है। अब बचाव पक्ष के वकील को इस कारण बदल दिया गया है कि वह धीमी गति हेतु हथकंडे बरत रहे थे। इस केस में और अधिक विलम्ब होगा, क्योंकि चार सौ गवाह हैं और 580 शपथ पत्र– इन सभी को एक बार फिर से निरखना–परखना होगा। क्या यह आवश्यक था कि इतने अधिक साक्षियों का शपथपूर्वक बयान लिया जाए। विलम्ब से पाकिस्तान के मानस में यह संदेह सृजित हो सकता है, जो मुंबई हमले के बारे में ही गई जानकारी से असंतुष्ट है।

भारत द्वारा पेश की गई दूसरी शर्त कि पाकिस्तान आतंकवादियों के ढांचे को ध्वस्त करे, उस बारे में मेरा यह विश्वास है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री युसुफ राज गिलानी के आश्वासन से ही नई दिल्ली के भय का निवारण हो सकता है। जब पाकिस्तानी सेना यह दावा करती है कि उसने आत्मघाती बॉम्बर ट्रेनिंग कैम्प्स (वजीरिस्तान के दक्षिण में) समेत आतंकवादी ढांचा उसने नष्ट कर दिया है, तो वह वैसी ही कार्रवाई आसानी से उन आतंकवादियों के विरुद्ध भी कर सकती है जो भारत के विरुद्ध सक्रिय हैं।

इस्लामाबाद को भले ही यह अनावश्यक लगे किन्तु भारतीय जनमत उस स्थिति में स्वयं को आश्वस्त महसूस करेगा जब स्पष्ट तौर पर यह कहा जाएगा कि आतंकवादियों को भारत के विरुद्ध पाकिस्तान की धरती से अपनी गतिविधियां नहीं चलाने दी जाए। यहां परिदृश्य में आती है आईएसआई। उसने मुंबई हमले में शामिल सात व्यक्तियों के विरुद्ध अभियोग की 'अनुमति' दी है। इस बात की अनुभूति हो सकती है कि भारत के विरुद्ध आतंकवाद एक मंहगा सौदा साबित होगा। इस्लामाबाद को आगामी पांच वर्ष के लिए 7.5 अरब डालर दिए जाने से संबंधित कैरी–ल्युगर–बेटमन अधिनियम उसके सिर पर लटकती तलवार के तुल्य है। वाशिंगटन की विशेष टीम पर इस सब पर नजर रखे हुए है कि नकदी या वस्तु के रूप में क्या कुछ हो रहा है और उसका उपयोग कैसे किया जा रहा है।

अब वार्ता पर आते हैं, इनकी बहाली से नई दिल्ली भी लाभान्वित होगी। वह तालिबान और अन्य जिहादियों को यह संदेश देगी कि दोनों देशों के बीच संबंध सुधर रहे हैं। पाकिस्तान उनके विरुद्ध जो कुछ कर रहा है, वह दोनों देश एक साथ कर सकते हैं। यदि दोनों देश मिलकर आतंकवादियों से भिड़ते हैं तो यह दोनों के लिए ही अच्छा होगा। पाकिस्तान हमारी प्रथम रक्षा पंक्ति है। सेनाध्यक्ष दीपक कपूर द्वारा दिए गए पाकिस्तान के विरुद्ध सीमित युद्ध जैसे बयान उत्तेजक और गैर–जिम्मेदाराना कहे जा सकते है। उनसे तो भारत की विश्वसनीयता पर ही आंच आती है।

पाकिस्तान युद्धरत जैसी स्थिति से ग्रस्त है। मगर उसके लोगों के लिए अपने विवाद सुलझाने होंगे। उन्होंने एक ऐसी संस्कृति का सृजन किया है, जिसे 'आत्मनिष्ठ इतिहास' कहा जा सकता है। पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री सरताज अजीज ने अपनी नवीनतम पुस्तक 'बिटविन ड्रीम्स एंड रियलिटीज' में कहा है कि 'घटनाएं एक रंगीन चश्मों के माध्यम से निहारी जाती हैं, निष्कर्ष पूर्व–परिकल्पित विचारों में निहित है और 'हीरो' और विलेन इस पूर्वाग्रह ढांचे के तहत पहचाने जाते हैं...'

नेलसन रिसर्च कम्पनी द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण में कहा गया है कि दस में से मात्र एक ही को सरकार में भरोसा है। ज्यादातर स्वयं को पहले मुसलमान और फिर पाकिस्तान मानते हैं और वे ऐसे कार्यदल में प्रविष्ट हो रहे हैं जिसमें बहुमत को काम नहीं मिल सकता। इस्लामीकरण के उभार का हमारे देश पर अपना प्रभाव है खासतौर पर तब जब तालिबान यह कह रहे हैं कि भारत हमारा अगला निशाना है। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने दोहराया है कि व्यक्ति से व्यक्ति के संबंध में प्रगाढ़ता होनी चाहिए। यह एक शुभ वक्तव्य है। किन्तु यह कैसे संभव हो सकता है, जबकि एक पाकिस्तानी के लिए 'वीजा' पाना असंभव है? कम से कम प्रधानमंत्री भारत में पाकिस्तानी अखबारों की बिक्री पर लगे अंकुश एक पक्षीय तौर ही उठा सकते है।

पॉर्न स्टार बनने की थी ख्वाहिश

बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख खान के मुरीद बन चुके लोगों को शायद यह खबर हैरत में डाल दे। शायद हंसी-मजाक ही सही, किंग खान ने कहा है कि उनकी हमेशा की ख्वाहिश पॉर्न स्टार बनने की रही है। यानी उनकी हर अदा निराली है। खासकर बात जब मजाक करने की हो तो उनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता।शाहरुख को इसका ख्याल कहां से आयाबॉलीवुड के इस बादशाह ने मैनेजमेंट गुरु अरिंदम चौधरी की किताब 'डिस्कवर द डॉयमंड इन यू' के विमोचन के मौके पर पॉर्न स्टार बनने की अपनी ख्वाहिश जताकर कई लोगों को चौंका दिया। शाहरुख खान ने कहा कि वह हमेशा से एक पॉर्न स्टार बनना चाहते थे। इतना ही नहीं उन्होंने कहा कि वह एक पॉर्न स्टार के किरदार की तमाम खूबियों को साफगोई के साथ जीना चाहते हैं। किंग खान की इस तमन्ना के बारे में जानकर अब आप यह तो जरूर जानना चाहेंगे कि शाहरुख खान को इसका ख्याल कहां से आया। उन्होंने इसका खुलासा कुछ यूं किया।अमेरिका में अपनी बुलंदी का झंडा उठाएंगेउन्होंने कहा कि वह हॉलीवुड के सुपर स्टार सिल्वेस्टर स्टैलोन के बहुत बड़े फैन हैं। सिल्वेस्टर सुपरस्टार बनने से पहले एक पॉर्न स्टार रहे थे। लोगों की राय में आखिरकार बॉलीवुड में सेक्स और शाहरुख यूं ही नहीं बिकते। कार्यक्रम के दौरान शाहरुख खान ने जब यह कहा कि वह दुनिया के सबसे बड़े और कामयाब पॉर्न स्टार बनने के बाद अमेरिका में अपनी बुलंदी का झंडा उठाएंगे तो वहां मौजूद अपने ठहाके नहीं रोक सके।उदाहरणों का गलत मतलब निकालते हैंगौरतलब है कि यह पूरा मजाक उस वक्त शुरू हुआ जब अरिंदम चौधरी अपनी किताब का अंश पढ़ते हुए सिल्वेस्टर स्टैलोन का जिक्र किया। उन्होंने स्टैलोन का जिक्र इसलिए किया कि किस तरह एक पॉर्न स्टार अपनी लगन और मेहनत के बूते सुपर स्टार बन जाता है। उन्होंने जापान की एक नामी इलेक्ट्रॉनिक कंपनी के संस्थापक आकियो मोरिता की कामयाबी का भी जिक्र किया। अंत में शाहरुख यह मजाक करने से भी नहीं चूके कि आखिर उन छात्रों का क्या होगा? जो मेरी तरह अच्छे उदाहरणों का गलत मतलब निकालते हैं।

सरकारी मदद पाने वाले जापानियों की संख्या बढ़ी

तोक्यो 9 दिसंबर सितंबर में सरकारी सहायता प्राप्त करने वाले परिवारों की संख्या उल्लेखनीय रूप से बढ़ी। आंकड़ों में स्पष्ट किया गया कि पिछले साल के मुकाबले मुख्य तौर पर रोजगार गंवाने के कारण या वेतन में कटौती के कारण यह संख्या 1.22 गुना बढ़कर 12.6 लाख हो गई। जापान के स्वास्थ्य, श्रम एवं कल्याण मंत्रालय की रपट के आधार क्योदो न्यूज द्वारा किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक मंदी के असर के मद्देनजर बेरोजगारी और वेतन में कटौती के कारण सरकारी सहायता पानेवालों की संख्या बढ़ी है। हों, अपंग व्यक्ति हों, एकल संरक्षक हो या फिर ऐसे लोग हों जो काम कर सकते हैं लेकिन अपनी नौकरी गंवा बैठे हैं या फिर जिन्हें पर्याप्त आय नहीं होती।

मन पर छाप छोड़ने वाली फिल्म है 'पा'

कभी एंग्री यंगमैन की छवि वाले अभिनेता रहे अमिताभ बच्चन ने 'पा' फिल्म में प्रोजोरिया नामक लाइलाज बीमारी से पीड़ित एक बच्चे के किरदार को निभाया है। अपनी इस भूमिका के जरिए उन्होंने जो मिसाल कायम की है उस जैसा दूसरा उदाहरण लंबे समय तक शायद ही देखने को मिले। वास्तविक जीवन में अमिताभ के पुत्र अभिषेक इस फिल्म में अमिताभ के पिता की भूमिका में हैं और इन दोनों के बीच कई दृश्य ऐसे हैं जो हृदय को छू जाते हैं। इन पर लोग आंसू बहाते भी दिखे। निर्देशक आर. बाल्की अपनी लीक से हटकर बनी इस फिल्म के जरिए भावनाओं का ज्वार दर्शकों के मन में उमेड़ने में सफल रहे हैं। विदेश में पढ़ाई कर रहे अमोल आप्टे (अभिषेक बच्चन) और विद्या (विद्या बालन) कुछ मुलाकातों के बाद नजदीक आते हैं और दोनों में प्यार हो जाता है। अमोल जहां राजनीति में अपना कैरियर बनाना चाहता है वहीं विद्या की इच्छा डाक्टर बनने की है। पढ़ाई पूरी करने के बाद संसदीय चुनाव लड़ने के लिए जब अमोल वापस भारत जाने लगता है तो विद्या बताती है कि वह उसके बच्चे की मां बनने वाली है तो अपना कैरियर बनाने के लिए संघर्षरत अमोल विद्या से इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए कह कर चला जाता है। विद्या को अमोल का यह रवैया पसंद नहीं आता और वह अपनी मां के पास चली जाती है और बच्चे को जन्म देती है। बच्चा प्रोजोरिया नामक बीमारी से ग्रसित है जिसका कोई इलाज नहीं है। बच्चे का नाम 'औरो' है और वह 12 साल की उम्र में ही 60 साल का दिखने लगता है। उसकी हरकतें सामान्य बच्चों सी ही हैं और सही बात के लिए वह हमेशा अड़ जाता है।